छुपा रुस्तम

कीमत १३ पैसे

नव केतन इंटरप्राइजेस

डायरेक्टर-विजय आनंद म्यु.-एस. डी. बर्मन

कलाकार-देव आनंद, हेमामालिनी, विजय आनंद, प्रेमनाथ

गीत—नीरज और विजय आनंद

छुपा रुस्तम के गाने

मन्नाडे व साथी- (कव्वाली) —१—

हम छुपे रुस्तम है कयामत की नजर रखते है
जमीं तो क्या है आस्मां की खबर रखते है
छुप न पाये कोई तस्वीर हमारे आगे
चल न पाए कोई तदबीर हमारे आगे
टूट जाती है खुद शमशीर हमारे आगे
सर झुकाती है हर तकदीर हमारे आगे
राह कांटों में बना लेते है आस्मां सर प उठा लेते है
हम अगर तैश में आ जाये तो-
आग पानी में लगा देते है हमारे दम से ये जमाना है
शराबो-जाम है मयखाना है
हम जहां सर को झुका दे यारों
वहीं काबा वहीं बुतखाना है
हम इन्सां है इन्सां के लिए दार पे सर रखते है
जमीं तो क्या है आस्मां की खबर रखते है
तोरी नजरिया गोरी जैसे रस की नदी लहराये

एकबार जो डुबे इनमें पल पल गोता खाये रामा
नजर ये तीर भी तलवार भी है
नजर ये फूल भी है खार भी है
घटा भी मेघ भी मल्हार भी है
नजर दिल की जुबान होती है
मोतियोंका मकान होती है
प्यार का इम्तहान होती है जमींपर आसमान होती है
नजर उठ जाये तो दुआ बन जाये
अगर झुक जाये तो हया बन जाये
जो तिरछी तो अदा बन जाये
पडे सीधी तो कजा बन जाये
नजर कोई भी हो हम सबपे नजर रखते है
जमीं तो क्या है आसमां की खबर रखते है
हम तेरी तलाश में जाने जहां
जीने का नया दस्तुर बने कभी कैस कभी फरहाद
कभी खैयाम कभी मंसूर बने
क्या-क्या न बने हम तेरे लिए
पर जो भी बने भरपूर बने
अब आये मजा मेरा खूने-जिगर
तेरी मांग का जब सिंदूर बने
..टखट हम नटवर तेरेलिए

दर-दर घूमे बन-बन भटके पर्वत पे गये सूली पे चढ़े
नित खाये मुकद्दर के झटके
तेरे घूंघटपट की सलवट में
अट-पट ये मोरे नैना अटके
झटपट दे हमें दरसन हम तो
प्यासे है तेरी काली लट के ओ मेरी आरजू आ
ओ मेरी जुस्तजू आ जरा तु रुबरु आ
ले ही जायेंगे उठाके भरी महफिल से तुझे
चुराले आंख से काजल वो हुनर रखते है
हम छुपे रुस्तम है-छुपे रुस्तम है

किशोर कुमार— —२— गीत-नीरज

धीरे से जाना खटियन में ओ खटमल !
धीरे से जाना खटियन में सोई है राजकुमारी
देख रही मीठे सपने जा जा छुप जा तकियन में
धीरे जाना खटियन में वीरान थी अपनी जिंदगी
और सूना था अपना मकान हाय ! हायरी किस्मत
मिले मुश्किल से ये मेहमान
हो भी जाते शायद मेहरबान
आग लगा दी है सुखन में ओ खटमल !
धीरे से जाना खटियन में
कोमल कोमल है इनका बदन कांटें सी तेरी चुभन

बाधा डाले जिंदियन में ओ खटमल
धीरे से जाना खटियन में
हे किधर जाता है ? खबरदार हुं छुप-छुपके
क्यों छुप-छुपके प्यार करे तू
बडा छुपा हुआ रुस्तम है तू
ले ले हमको भी शरण में ओ खटमल
धीरे से जाना खटियन में

किशोर व आशा- —३— गीत-विजय आनंद

जिमी जो मै होता एक टूटा तारा तेरी रातों का
तो क्या होता
बैरबी-जो मै होती कोई भटकी किरन उस तारे की
तो क्या होता ?
दोनों-बनत संग-संग मिटते संग संग
जीते संग-संग मरते संग-संग
बैरबी-जो मै होती उडी-उडी नींद तेरी आखों की
तो क्या होता ?
जिमी-जो मै हो । मीठा मीठा सपना उन नींदों का
तो क्या होता ?
दोनों—बनते संग-संग मिटते संग-संग
जीते संग-संग मरते संग-संग
जिमी-जो मैं होता किस्मत का लिखा तेरे हाथों का

भटके पर्वत होता ?

बीबी—जो मै हो छुपा छुपा मतलब तेरी बातों का
तो क्या होता ?

दोनों—बनते संग-संग मिटते संग-संग
जीते संग-संग मरते संग-संग

लता मंगेशकर— —४—

सुनो सुनो सुनो मेरी दुखभरी दास्तां दुखभरी मेरी दास्त
जला मेरा आशिया हाय मै क्या करु
मां मेरी खोई भाई मेरा खोया
प्यार भरी दुनिया मिट गई
महलों की रानी बनी है भिखारिन
बीच डगर मै तो लुट गई
जला मेरा आशिया हाय मै क्या करु

—५—

बैरी है जमाना गांव है अजाना
राहें मुशिकल जहा मुझे जाना
होठ सिले मेरे पाव बधे मेरे नैनो में आंसू की हथकडी
इधर उधर मेरे खडे है लुटेरे देखे कोई मेरी बेबसी
जला मेरा आशिया हाय मै क्या करु

आशा भौसले-लकडी जली कोयला बनी
कोयला बना है धुल मै पापन ऐसी जली
कोयल बनी न धुल दिखे न धुआ दिखे न आगन

नदियन में अे

(७)

कैसी है ये जलन जलू मै जलू में जले ये मेरा दिल
जले तु जले तु जले तेरा दिल
दिखे न धुआ दिखे न आगन कैसी है ये जलन
शोला है हुस्न मेरा बिजली है जवानी
छूके मुझ जल जाये पत्थर हो या पानी
दिखे न धुआ दिखे न आगन कैसी है ये जलन
ये सितारे अंगारे मेरे तन-बदन के
बर्फ गले रात जले मेरी इस तपन से
दिखे न धुआ दिखे न जगन कैसी है ये जलन

—६—

किशोर आशा—
रीतु—सुनो एक बात तो बताओ
अशिवनी—पुछो पुछो पुछो ना
रीतु—बोलो क्या हमको दोगे दिल जो हमने तुमको
बिना मांगे दे दिया हसते हसते बोलो क्या हमको दोगे
अशिवनी-पुछो क्या हम से लोगे दिल जो हमने तुमसे
बिना पुछे ले लिया हँसते हँसते पुछो क्या हमसे लोगे
रीतु—बहका करे जो तेरी बाहो में
महका करे जो तेरी राहो में चहका करेजो तेरी चाहोमें
घर बसा लें जो हम तेरी निगाहों में तो क्या हमको दोगे...
अशिवनी—दुश्मन जलेंगे जब मिलेंगे हम

प्यासे कभी न फिरे रहेगे हम जल रहा है ?

रीतु—बहुत.....

आशिवनी—बहुत ? तो जलने दो

दुश्मन जलेंगे जब मिलेंगे हम

प्यासे कभी न फिर रहेंगे हम

जन्नत बना लेगे जमी पे हम

खुशियां रहेगी और रहेगे हम पुछों क्या हमसे लोगे

रीतु—तेरी बाहो का जब सहारा हो

रस्ता फिर कितना अधियारा हो

उठते है तुफां तुम किनारा हो जो कुछ भी अपना है

वो सब-कुछ तुम्हारा हो तो क्य को दोगे

७—आशा—मर जाऊं शरमाके ऊई मै हुं छुई-मुई...

आखों से देखो लेकीन छुओ न

खिलते बागों की मै कोमल डाली घर में लाकर रखा तुमने

चाहा दिल से फिर भी मुरझाऊं

मदिरा की हुं प्याली लेकिन छोटी सी

प्यासे हो तुम कूंए जैसे

थर-थर कापु मै डर जाऊं मर जाऊं

प्रकाशक—एफ. बी. बुरहानपुरवाला, सेंट्रल प्रकाशन
सिंप्लेक्स बिल्डिंग, पाववाला स्ट्रीट बंबई ४।
मुद्रक—एस. के. खरगोनवाला
बाकीर प्रिंटिंग प्रेस, मुझफराबाद हॉल ग्रांट रोड बंबई ७